सत्य साहित्य

New Series
Vol. 1 • No. 2
April 2013

Satya Sahitya, a Quarterly Newsletter of **Shree Ram Sharnam International Centre**, New Delhi

सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

**Let us sing the Omniscience of Shree Ram, the Supreme Soul,
who is the Fountainhead of all animate and inanimate energy of the cosmos**

139

राम रस मीठा रे, कोई पीवै साधु सुजाण
सदा रस पीवै प्रेम सूं, सो अबिनासी प्राण - राम..

(1) इहि रस मुनि लागे सबै, ब्रह्मा, बिसुन-महेस
सुर-नर साधु-सन्त जन, सो रस पीवै सेस ॥

(2) सिध-साधक जोगी-जती, सती सबै सुखदेव
पीवत अन्त न आवई, ऐसा अलख अभेव ॥

(3) इहि रस राते नामदेव, पीपा अरु रैदास
पिवत कबीर ना थक्या, अजहूं प्रेम पियास ॥

(4) यह रस मीठा जिन पिया, सो रस ही माहिं समाइ
मीठे मीठा मिलि रह्या, दादू अन्त न जाइ ॥

राम रस मीठा रे ....

परम पूज्य महाराज जी की भजन डायरी से

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- एकान्तवास
- श्रद्धा सुमन
- परम पूजनीय महाराज जी के श्रीमुख से समाधान
- गुरुजनों के श्रीमुख से
- ‘शत् शत् प्रणाम’
- PLANNER
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- ‘अनुभूतियां’
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य

वर्ष 1999। परम पूजनीय गुरुदेव डा. विश्वामित्र जी महाराज को गुरुपद सम्भाले हुए, लगभग छः वर्ष पूरे होने वाले थे। 15 मार्च 1999, उनके जन्मदिन के पावन अवसर पर रोहतक में सत्संग का कार्यक्रम रखा गया था। वहीं पर 14 मार्च की रात को महाराज श्री ने अपने एकान्तवास पर जाने की इच्छा ज़ाहिर की।

परम पूज्य महाराज जी के जीवन में एकान्तवास का बहुत महत्व था और साधना के उत्कर्ष तक पहुँचने के लिए वे इसे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन मानते। एकान्तवास से सम्बन्धित अपने विचार महाराज श्री ने इस लेख में व्यक्त किए हैं।

‘साधना में एकान्तवास का महत्व’

विश्वामित्र

मानव स्वभाव के तीन प्रमुख पक्ष हैं –

1. जानना अथवा ज्ञानोपार्जन करना – इसे बुद्धि–पक्ष कहते हैं। 2. भावों अथवा उद्वेगों का अनुभव करना जिसे हृदय–पक्ष कहते हैं और 3. क्रियाशीलता जिसे कर्म–पक्ष कहते हैं। इसके अनुरूप गीता जी में परमात्मा की प्राप्ति के तीन मार्गों का उल्लेख है – ज्ञान मार्ग, भक्ति मार्ग और कर्म मार्ग। जैसे मनुष्य में तीनों पक्षों में से एक की प्रमुखता स्वभाव में अधिक प्रकाशित होती है ऐसे ही साधक भी स्वभावानुसार एक निष्ठा के आश्रित होकर अग्रसर होता है भले ही उसमें अल्प मात्रा में अन्य पक्षों के अंश भी अवश्य ही होते हैं। कर्मयोगी, ज्ञानी और भक्त सिद्धावस्था को प्राप्त होकर, परिपक्व फल की भान्ति रसपूर्ण हो जाते हैं। ज्ञान, कर्म

और भक्ति की परिपक्वता अहंकार के लोप, पूर्ण शरणागति और समस्त जगत को प्रभुमय देखने में है। ज्ञानी अपने को कर्मों का कर्त्ता–भोक्ता नहीं मानता किन्तु भक्त स्वयं निमित्तमात्र बन कर कर्म का सम्बन्ध भगवान् के साथ जोड़ता है और कर्म के अर्पण द्वारा कर्म–विमुक्त हो जाता है। तीनों मार्ग अपने–अपने ढंग से अन्ततोगत्वा जीवात्मा और परमात्मा के एकत्व का बोध कराते हैं। इस उपलब्धि के लिए अपनाए गए साधन आध्यात्मिक साधना के अंग है। इन साधनों को चाहे गृही बन कर साधें अथवा एकान्त में, साधने तो पड़ेंगे ही।

प्रायः साधक को अल्पकाल के लिए एकान्तवास करने के आदेश सन्तजनों से मिला करते हैं। इसका अभिप्राय संसार से पलायन करना नहीं समझना चाहिए और न ही किसी आश्रम में स्थायी आश्रय ग्रहण कर लेना, विशेषतया जहाँ हर प्रकार की सुख सुविधा उपलब्ध हो क्योंकि सुख में मग्न साधक, जीवन–यापन करता हुआ अपने लक्ष्य का विस्मरण कर देता है। एकान्तवासी को तो यह सीखना है कि संसार में विचरते हुए एकान्त का अनुभव कैसे हो, अर्थात अनासक्त कैसे रहा जाए? उसे तो यह शिक्षा ग्रहण करनी है कि जनसमूह में वैरागी बनकर, कर्त्तव्य–कर्मनिष्ठ कैसे बना जाए? विनम्र भाव से, कर्तृत्व–भोक्तृत्व का भाव मिटाकर सब की सेवा–शुश्रूषा में रत कैसे रहा जाए ? एकान्तवास का अभिप्राय यह नहीं कि वन में रहकर भी जगत का बोझ अर्थात् जगत को अपने हृदय में उठाए रखना, न ही जगत को छोड़कर वहाँ जाकर दूसरा संसार बसा लेना और न ही यह कि चार सदस्यों का परिवार छोड़ कर चालीस शिष्यों के परिवार को अपना लेना, उनमें आसक्त हो जाना। कई तो आश्रमों के ईंट–पत्थरों में ही आसक्त हो जाते हैं। एकान्त का अर्थ यह समझना चाहिए– अपने भीतर शून्यता और शान्ति का अनुभव। मन में राग होने पर एकान्त में, निर्जन वन में जाकर भी दोष उत्पन्न हो जाते हैं। एकान्तवास को साधक अनुष्ठान समझे। वह सदैव सतर्क रहकर निरन्तर प्रयत्नशील रहे कि मन का हठपूर्वक दमन न हो और न ही वह मनमानी करे, बल्कि उसे स्वाध्याय, जप, ध्यान, भजन–कीर्तन अथवा अध्यात्म–सम्बन्धी कुछ लिखने में व्यस्त रखकर, उसे सांसारिक विषयों में न खोने दे।

एकान्तवास, कुछ समय के लिए साधना की परिपक्वता के लिए अनिवार्य प्रतीत होता है। समय की अवधि नहीं बांधी जा सकती, कुछ माह में ही लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है, कुछ वर्ष भी लग सकते हैं और अनेक जन्म भी अपर्याप्त हो सकते हैं। एकान्तवास के समय पत्र–व्यवहार, समाचार पत्र–अध्ययन आदि छूट जाते हैं, सगे सम्बन्धियों की चिन्ताएँ भी साथ नहीं होती, पूर्ण स्वतन्त्रता होती है, पूर्ण निश्चिन्तता और अनुकूल समय भी पर्याप्त होता है। ऐसे समय में मन विभिन्न विचारों अथवा चिन्ताओं से बोझल भी हो तो उसे हल्का बनाया जा सकता है। अनावश्यक इच्छाओं का, कामनाओं का पूर्ण अभाव, उन्मूलन किया जा सकता है और अनुष्ठान के लिए सुगमतापूर्वक तीव्रता लायी जा सकती है। साधना में अधिक से अधिक 'राम नाम' के जाप को प्रमुखता देनी चाहिए जिससे मन संयमित हो जाए, राम में रम जाए और संकल्प–विकल्प के लिए कोई स्थान ही न रहे। सन्त सम्मति में नाम जाप से भिन्न, इतना प्रभावशाली व शक्तिशाली कोई साधन नहीं जो विक्षुप्त मन को स्थिर कर सके। रुखे–सूखे भोजन का सेवन, अनुचित–अशुभ देखने–सुनने से विरक्ति, ऐसे उपाय अपनाने से विषयातीत अवस्था प्राप्त करने के लिए पूरा प्रयास करना चाहिए। मन इस प्रकार अभ्यासित करना होगा कि पुनः रसपान की वृत्ति ही स्फुरित न हो अर्थात ऐसी वृत्तियों का मूलतः उन्मूलन करना होगा। निर्विघ्न ध्यानावस्था लाभ करने के लिए दिन–रात यत्नशील रहना और जब जप–ध्यान न हो सके, उस समय स्वाध्याय अथवा भजन कीर्तन में मन को टिकाना। किसी प्रकार से एक क्षण भी व्यर्थ न जाए और न ही मन को ऐसा अवसर ही मिले कि वह परमेश्वर का स्मरण न कर, चंचल हो जाए। एकान्तवास करके भी किसी क्षण परमात्मा का विस्मरण होना, उस क्षण का दुरुपयोग ही कहा जाएगा–

कह हनुमन्त बिपति प्रभु सोई।
जब तव सुमिरन भजन न होई।।

अतएव निरन्तर चिन्तन, मनन, ध्यान, सिमरन व

नाम–संकीर्तन होता रहे। साधना, यह जानने के लिए भी परम आवश्यक है कि परमपुरुष की कृपा ही सर्वोपरि है, उसके बिना साधना सम्पन्न नहीं हो सकेगी और न ही कोई उपलब्धि। इसका तात्पर्य यह हुआ कि कृपासागर की कृपा केवल एकान्तवासी साधक पर ही नहीं, गृहस्थ पर भी होनी उतनी ही सम्भावित है। परन्तु यह भी स्मरण योग्य है कि अपनी कक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए, नालायक बालक को दूसरों की अपेक्षा अधिक परिश्रम करना पड़ता है – यह लौकिक सत्य भी है और साधनारुढ़ भक्त की भावना भी। अतः साधना तो जीवन पर्यन्त करनी चाहिए, क्योंकि इसमें सफलता लाभ होने के उपरान्त सन्त संसार में विचरता हुआ भी हर बाह्य आक्रमण से सुरक्षित रहता है, विचलित नहीं हो सकता और सांसारिक बन्धनों से अलिप्त रहता है। उसकी दृष्टि भीतरी प्रकाश से कभी सरकती ही नहीं। सांसारिक सुख व प्रलोभन उसे तुच्छ प्रतीत होने लगते हैं क्योंकि उसने तो परमानन्द का रसपान किया है, अमृत चखा है, अब उसे क्षणिक सुखों की, रसों की तनिक भी लालसा नहीं। वह इन सुखों को, स्वर्ग सुखसहित, तृणतुल्य समझता है। वह कुकर्मों से विरक्ति और पापों से उपरति लाभ कर चुका है। उसे सांसारिक पदार्थों के उपभोगों का राग यत्किंचित् भी नहीं हुआ करता। ऐसा सत्पुरुष पर–हित सेवा में तत्पर हो जावे, औरों का उद्धार करे, उन्हें मनपरिवर्तन के ढंग सिखलाए, अपने अनुभव से साधना के लिए प्रेरित करे और साधना करवाए, भक्ति–धर्म का महत्व दर्शाए, त्याग–वैराग्य का सार–मर्म समझाए क्योंकि वह अब सब में रहकर भी अनासक्त रहने की योग्यता प्राप्त कर चुका है। यह सब करते हुए भी वह साधु है, संन्यासी है, सेवक है।

एकान्तवासी का निश्चय जितना अविचल होगा, उसका संकल्प जितना सुदृढ़ होगा, उसे उतना ही लाभ होगा। ऐसी साधना में आलस्य–प्रमाद से, मनमानी से तथा अन्य दुर्गुणों से बचे रहने में भरसक प्रयत्नशील तथा सावधान रहना होगा। समय–समय पर आत्मनिरीक्षण अनिवार्य है। इसे सर्वथा हृदयस्थ रखना चाहिए कि –

''जिसका मन मैला रहे, निर्मल हो न विचार।
उसके तप संयम कर्म, समझो सर्व असार''।।

अर्थात साधक नाम का सिमरन, ध्यान, संकीर्तन व स्वाध्याय इतना करे कि मन थक जाए, इसने भी तो जीव को कई जन्मों के यातायात में बहुत थकाया है। फिर यह साधन मन को स्तब्ध करने का हठयोग व अन्य साधनों से सरल भी है और शीघ्र फलदायी भी। साधक जिस लक्ष्य को धारणकर निकला था, उसे निरन्तर स्मरण रखे, अपने पांव स्थिर रखे, डांवाडोल, निराश और शोकग्रस्त न हो, उतावला भी न हो। उसके लिए कोई रविवार नहीं, शीत–उष्ण उसके दैनिक कार्यक्रम में कोई विघ्न उपस्थित न करें। किसी भी प्रकार के शत्रुओं से, हिंसक जीवों तथा विभिन्न विघ्न–बाधाओं से भयभीत होकर घर न लौट जाए। प्रलोभनों से जो एकान्त में उपजने योग्य हैं अथवा जो ऐसे पथ के पथिक को रोकनेवाले व घेरनेवाले हैं, उनसे अपने आप को सुरक्षित रखे। लक्ष्य व उद्देश्य सदैव अपने सम्मुख रखे। इसी प्रकार साधना का प्रयोजन, साधना–सम्पन्न होने के उपरान्त का लक्ष्य दोनों हृदयंगम रखे। उसे तो अधिक से अधिक लोगों के दुःख, शोक हरने की योग्यता प्राप्त करनी है, उसे तो अधिक से अधिक लोगों को अपनाने में, अपने और पर–सुधार व कल्याण के लिए सशक्त होना है। साधना को एक उच्चतम प्रशिक्षण समझे और पूर्ण–पुरुष पुरुषोत्तम से शीघ्र सफलता के लिए, सदा, क्षण–प्रतिक्षण दीन होकर प्रार्थना करता रहे। ऐसा विश्वास रखे कि परमेश्वर कृपा से सफलता अवश्य लाभ होगी।

भगवान् श्री कृष्ण साधक को आत्म–निरीक्षण तथा आत्म–चिन्तन के लिए यदा तदा एकान्त–सेवन के लिए प्रेरणा देते हैं ; क्योंकि ऐसा करने से मन की निर्मलता एवं एकाग्रता के अभ्यास में महत्वपूर्ण सहायता मिलती है। अनुष्ठान के लिए भी कभी–कभी किसी एकान्त पवित्र स्थान का सेवन अत्यन्त लाभप्रद होता है। लाभ तो एकाग्रचित् उग्र साधना में है। मन, वाणी और इन्द्रियों के सन्तुलन में है, बुद्धि की समता में है।

गुरुपद सम्भालने के बाद पहली बार 30 जुलाई, 1999 को महाराज श्री तीन महीने के एकान्तवास के लिए चम्बी (हि. प्र.) चले गए। वहाँ से सत्तासी दिनों के एकान्तवास प्रवास से लौटने पर साधकों ने उनका दिल्ली स्टेशन पर ही लाल गलीचा बिछा कर भावपूर्ण एवं भव्य स्वागत किया। अगले दिन सत्संग में श्री महाराज जी ने अपने एकान्तवास से सम्बन्धित भाव एवं अनुभव साधकों के साथ बाँटे।

‘प्रथम एकान्तवास 1999’

गुरुजनों का यह गुलाम आपके श्रीचरणों में प्रणाम करता है। आज के भजन सुनकर बड़ा संकोच हुआ, न तो मैं राम हूं, न गुरु। परमेश्वर ने आप सबका दास बनाया है– विश्वदास, विश्वामित्र नहीं। न गुरु, न राम, परमेश्वर ने मुझे अपना शरणागत स्वीकारा है। मैंने अपना सर्वस्व परमात्मा के चरणों में चढ़ा दिया है, यही मेरी नौकरी है और आप भी मुझे दासानुदास समझें।

आपके आशीर्वाद और प्रभु की कृपा अद्वितीय है–इतने दिन ऐसे रहना। जब परमेश्वर की योजना हुआ करती है तो वह तनिक भी विघ्न बाधा नहीं आने देता। कोई विघ्न बाधा नहीं डाल सकता। इतने दिनों में शायद ही ऐसा दिन हो जब मैं आपसे आठ मिनट भी जुदा हुआ हूं। सत्तासी दिन किसी साधक को पास नहीं आने दिया जबकि आसपास के लोगों को पता लग गया था फिर भी कोई पास नहीं आया। क्या–क्या खेल खेलता है परमेश्वर! बाईस गज़ की जगह से बाहर नहीं निकला। परमेश्वर का ही खेल है कोई मानवीय योजना नहीं। उसने करवा के दिखाया। कौन जानता था अन्तिम दिवस से पहले पचहत्तर लोग दीक्षा लेंगे। कौन करवाता है यह सब? "मैं" मर जाए, "अभिमान" मर जाए, साधना तो इसलिए करने की चीज़ है। इतने दिनों बाद लोगों के आगे गया–लगता था आवाज़ नहीं निकलेगी।

सत्तासी दिन एक मां भी अपने बच्चों को ऐसे नहीं रख सकती। उस मातेश्वरी ने इस नन्हे–मुन्ने की ऐसी देखभाल करी। नालायक लायक सबको साधना करनी ही है। किए बिना परमेश्वर मिलन नहीं। चम्बी, पंजाब से केवल सौ कि.मी ही दूर था, पर कोई आया नहीं। शुरु–शुरु में चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई पड़ी। सच मानिए एक सप्ताह के बाद वह भी बन्द, कोई कहे *माईग्रेटरी बर्डस* थे, यह तो सब परमेश्वर की कृति थी। मैं यह दिया किया चुका न सकूंगा। आपके सहयोग के लिए मैं ऋणि रहूंगा। यहां रहते हुए यह पता नहीं लगता था आप अति स्नेही हैं, वहां रह कर पता चला।

आखिर यह साधना किस लिए? परमात्मा की इच्छा के बिना साधना कैसे हो सकती है? मन में इच्छा डालने वाला भी वही। प्रेरणा व बल देने वाला भी वही। अपना सर्वस्व परमेश्वर के श्री चरणों में चढ़ा दिया। सब कुछ स्वयं करता है। परमेश्वर के बिना शरीर शव है। वह रोम–रोम में बसता है, इसी के कारण पूर्ण सुरक्षा है। परमेश्वर जग जननी है, मां जैसे बालक को ढक कर (दुधमुंहे बच्चे) रखती है। आंचल में छुपा कर रखती है, नज़र न लग जाये किसी की, इसी प्रकार परमेश्वर ने रखा।

नाम की कमाई जैसी कोई चीज़ नहीं। अविराम नाम जपो। एक परमात्मा का नाम जपो।

राम नाम जपो कट जायेगी चौरासी
राम नाम जपो मिट जायेगी उदासी।

परम पूज्य श्री महाराज जी ने एकान्तवास से वापिस आने के पश्चात् अपनी एक थैली दी और कहा कि इसे उनके जाने के उपरान्त ही खोला जाए। परम पूज्य श्री महाराज जी के महानिर्वाण के बाद जब उस थैली को खोला गया तो उसमें एक हज़ार मनके की माला और उनके हाथ का लिखा यह पत्र था।

'श्री राम शरणम्'
8, रिंग रोड, लाजपत नगर-4, नई दिल्ली-110 024

दिनांक ....

श्री राम

जय श्रीराम

31 जुलाई सोमवार आज से
18 अक्टू. 99 ... 80 दिनों में
सवा करोड़ श्री राम नाम जाप
अपूर्व परमेश्वर कृपा
अन्तिम छः दिवस = 19 से 24 अक्टू.
दिवाली तक.

हे मेरे राम ! मेरा राम राम तेरा
अर्पण है, सदा सदा सदा सदा
कृतज्ञ रहना। सब कुछ तेरा है
उपजा ब्याज सहित तेरी पूंजी
तुझे चढ़ा दी है, तेरे चरणों
में सर्वस्व समर्पित

चरणां दी धूड़
चपियां
पालमपुर - हि. प्र.
23. X. 1999

राम राम

श्री सत्यपाल विरमानी जी को श्रद्धा सुमन

पूज्य श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज को जब राम नाम का साक्षात्कार हुआ और साथ ही परमेश्वर का आदेश हुआ तो उन्होंने, 'राम नाम' रुपी प्रसाद लोगों में बाँटना शुरु किया। स्वामी जी के अनुसार 'राम नाम' अन्य सभी योग साधनों से अधिक सुलभ और अधिक फलदायक है। इसलिए वे चाहते थे कि इसका सुनियोजित एवं व्यवस्थित ढंग से विस्तार हो। इसके लिए उन्होंने सन् 1936 में लाहौर में श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट का संगठन किया जिसका उद्देश्य पुस्तकों, साधना सत्संगों आदि के द्वारा 'राम नाम' का प्रचार व विस्तार करना था–

**''वृद्धि आस्तिक भाव की शुभ मंगल संचार,
अभ्युदय सद्धर्म का राम नाम विस्तार।''**

श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने उस ट्रस्ट के प्रथम आजीवन सदस्य के रुप में 25 वर्षीय युवक, श्री सत्यपाल विरमानी जी का चयन किया जो स्वामी जी के अन्तर्ज्ञान, अन्तर्दृष्टि व दूरदर्शिता को दर्शाता है। स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट को इनसे भविष्य में किस प्रकार का काम लेना है, इसका स्वामी जी महाराज को पूर्व से ही ज्ञान था।

अपने दीर्घ कार्यकाल में श्री विरमानी जी ने अति महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील समय पर स्वामी जी के नियमानुसार श्रीरामशरणम् का मार्गदर्शन किया। जैसे 9 दिसम्बर 1993 में परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज का तिलक किया और हाल ही में परम पूजनीय गुरुदेव श्री विश्वामित्र जी महाराज के ब्रह्मलीन होने पर समस्त श्रीरामशरणम् केन्द्रों को एक धागे में पिरोए रखने, और उनके बीच समन्वय बनाए रखने का अभूतपूर्व कार्य किया। स्वामी जी महाराज की विचारधारा के प्रचार–प्रसार, दीक्षा आदि से सम्बन्धित निर्णय में भी उनका पूर्ण समर्थन रहा। श्रीरामशरणम् के यह भीष्मपितामह अपनी सारी ज़िम्मेदारियों को दक्षतापूर्वक निभाते हुए जनवरी 2013 को परलोक सिधार गए।

श्री सत्यपाल विरमानी जी का जन्म 24 सितम्बर, 1913 को लायलपुर पाकिस्तान में हुआ। श्री विरमानी जी ने सन् 1933 में गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से अर्थशास्त्र में बी.ए ऑनर्स किया। कुशाग्र बुद्धि के कारण वे युवावस्था में ही सन् 1937 से 1951 तक रिज़र्व बैंक ऑफ इन्डिया में वरिष्ठ पद पर रहे, और बाद में स्टेट बैंक एंव कई अग्रणी कम्पनियों के भी निदेशक रहे। वे बड़ी–बड़ी सरकारी एवं अन्तर्राष्ट्रीय समितियों के सदस्य रहे, जो देश–विदेश की प्रगति व उन्नति से सम्बन्धित नीतियाँ बनाती हैं। इतने महत्त्वपूर्ण व प्रतिष्ठित पदों पर रह कर उन्होंने अपनी कार्यकुशलता, निपुणता, कुशाग्र बुद्धि व योग्यता का पूर्ण परिचय दिया। वे जलियाँवाला बाग के आधुनिकीकरण कार्य से भी सम्बद्ध थे। उनका योगदान सदा स्मरणीय रहेगा।

ऐसे प्रगतिशील व्यक्तित्व के हाथ में श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट की बागडोर दी।

श्रीरामशरणम् उनका सदा आभारी रहेगा। श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट के भीष्म पितामह को शत् शत् नमन ! ■

Sadhaks' Question & Answers with Param Pujniya Maharajji on Spiritual Issues

Q: Maharajji, it is difficult to be a *grahasthya* and also pursue spirituality. Please advise me

Pujniya Maharajji: 'Leaving the world is no solution. Where will you go where there is no work. Develop mental detachment. Work as a servant of the Lord & perform all duties assigned by HIM honestly, truthfully to please HIM & not the world. This is not impossible. God's Grace be upon you to bless you with adequate strength. Loving Jai Jai Ram.'

Q: Maharajji, how can I be spiritual?

Pujniya Maharajji: 'Keep praying to my Gurudev and Dada Guru regularly. They will help & guide your good-self in all spiritual pursuits. Doing Pranam at their holy feet means shedding of ego and thus making a disciple recipient of their copious Grace. Our *upasna* is mental. Keep anchored to their holy feet. Relation with Prabhu Ram as your Mother is acceptable to HIM. Be a good baby. Lord is a matchless mother. Loving Jai Jai Ram. Have a great & blissful …..'

Q: Maharajji, you say we should forgive and forget others faults. Should we move away from those who have not been kind to us?

Pujniya Maharajji: 'Move away, turn your face but without developing hatred for anyone on this earth. Wish you ….- a year full of devotion & dedication. All love. Jai Jai Ram.'

Q: Maharajji, is everything we do in life fixed. Is *prarabdha* everything?

Pujniya Maharajji: 'Karma only make your *prarabdha*. It is restricted only to worldly affairs and is pre determined. You can change it by fervent devotion or intensest love for HIM. Loving Jai Jai Ram.'

Q: Maharjaji, Not being able to control my thoughts and actions immediately really bothers me…

Pujniya Maharajji: 'Most loving Jai Jai Ram. It is true when a room closed for years is broomed, lots of dirt comes up. Similarly, thoughts will trouble but will stop eventually. Continue Japa & meditation to still & purify the mind.'

Q: Maharajji, What is my purpose in this world?

Pujniya Maharajji: 'Purpose of life is to work honestly and thus earned money be used for family & others to clear the debts of previous births. Shed, shed, shed. Forget your past. Live only in present without having any anxiety about future which depends upon your present. ….Work you must. The hands are for giving, not for begging. May Ram Naam bless your good-self with a lot of strength to do so. Purity in thoughts, words & deeds must be achieved by all possible means. Loving Jai Jai Ram to all of you there.'

Q: Maharajji, when I do Jaap, my mind skips very swiftly that I am not aware.

Pujniya Maharajji: '…. . To stop skipping of mind, the remedy is more jap. Do it regularly for a long time. Then mind will stop running with the world. Best wishes. Loving Jai Jai Ram.'

Q: …I need to silence myself and thought process and replace them with Ram Jaap.

Pujniya Maharajji: 'Where there are no obstacles, no impediments, events happen quickly, perfectly & even effortlessly – please regard them all as ordained by HIS SUPREME WILL. After such events, there is no repentance but joy & satisfaction. But an ambitious or over ambitious individual tries to attain the endless so remains confused and gets often disappointed. There is a need to silence as also an equally strong need to restrain ambitions/desires. Loving Jai Jai Ram.'

Q: Maharjji, Please give me some rules that I should always follow or try to follow

Pujniya Maharajji: 'Read "Inner Life of devotee" in English or Hindi by H.H. Swami Satyananda Ji Maharaj and you get the reply. Loving Jai Jai Ram. Be good and do good.'

Q: Maharajji, I do jaap but have disturbed sleep

Pujniya Maharajji: '….. Mental disturbance is possibly because of tension & over thinking. Please check this nature by doing at least 20 thousand japa daily. This will improve meditation. …. Loving Jai Jai Ram.'

Q: Maharajji ..when will this soul be able to meet Parmatma …

Pujniya Maharajji: *"Sanoon' mil gaya Nam Pyara, Asi hor ki Mangna'* – so says Swami Ji Maharaj. Rejoice repeating Ram Ram, the bliss you attain is no less than Ram Milan. Best wishes. Must cry for it. Loving namaskar.'

*(*The replies by Pujniya Maharajji are reproduced verbatim, though the questions have been modified, where necessary, to maintain anonymity of the sadhak.)*

परम कृपामय को धन्यवाद
परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज

एक युवक अपने भाई के पास रहता था। वह भाई भाभी का सब काम करता, उनके बच्चे को भी उठाए रखता, बड़े अच्छे स्वभाव का था। हर समय प्रसन्न और दूसरों के लिए हर प्रकार की सेवा के लिए सदा तत्पर रहता। एक दिन बच्चे को हँसा रहा था कि अकस्मात् बच्चा नीचे गिर गया और लगा रोने। बच्चे की माँ से यह बच्चे का दुःख सहा न गया और बच्चे के बाप से कहने लगी क्या है यह छोकरा। हर समय मेरे बच्चे को रुलाता रहता है। वह युवक मौन हो गया और आश्चर्यचकित होकर कहने लगा कि हँसाने का तो कभी वर्णन नहीं किया था परन्तु रुलाने को भूलते ही नहीं।

यही दशा हम सबकी है। परमेश्वर सब को सब कुछ देता है उसे हम कभी याद नहीं करते। किसी के आगे उसकी अपार कृपा का वर्णन भी नहीं करते। परन्तु जब थोड़ा सा किसी चीज का अभाव हो व कोई कष्ट आ जाए, कोई दुःख घेर ले तो हर समय उसी को याद करते रहते हैं और उसी संकट को सबके आगे रखते हैं जिससे दूसरे के मन को भी अशान्त कर देते हैं। परन्तु जो कुछ अभी तक अपने पास में है उसके लिए कभी कोई विचार भी नहीं करते और वैसे कोई थोड़ी सी भी वस्तु दे, कुछ उपकार करे उसका धन्यवाद करते हैं। माँ बाप छोटे नन्हे बालकों को भी यही शिक्षा देते रहते हैं कि उनके कुछ देने पर भी बच्चा उनको धन्यवाद कहे। हमारे पुरखा में यह सदा ही चला आया है कि कोई थोड़ा भी करे उसको बहुत मानना, और उसको सदा याद रखना। पूज्य महाराज ने तो आप सब की आत्मा को ऊँचा उठा दिया और उसकी ओर ध्यान भी नहीं दिया परन्तु दूसरे किसी ने यदि घड़ी भी पकड़ाने में सहायता दी या झुककर नमस्कार भी किया तो उसको कभी भुलाया नहीं। जगत के पिता, त्रिलोकी के नाथ श्री रामचन्द्र जी महाराज में यह सब गुण थे कि किसी के थोड़ा सा उपकार किए जाने पर उसे सदा सराहते थे, याद करते और उसके आभारी होते ।

कथंचिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यति।
न स्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मवत्तया।।

(वाल्मीकीय रामायण)

परमेश्वर ने हमें इतना कुछ दिया है, जिसका कोई अन्त ही नहीं – क्या हमने कभी धन्यवाद किया ? जब तक शरीर स्वस्थ है तो कुछ भाव नहीं आया कि यह उसी की देन है परन्तु अपनी ही त्रुटियों के कारण कुछ विकार हो गया तो उसे हम बार–बार याद करते हैं। हम सब को वही दुःख सुनाते हैं, परन्तु सुखों का किसी के आगे वर्णन ही नहीं।

ऐसे दुःखों के लिए प्रार्थना करना उचित है। परमेश्वर कृपा भी कर देते हैं। ऐसी दशा में कष्ट निवारण होने पर यह परम कर्त्तव्य होना चाहिए कि उसका धन्यवाद करें।

यदि किसी के भाई में, किसी के बच्चे में अथवा किसी के पति में कोई बुराई हो, कोई अवगुण हो उसको दूर करने के लिए प्रार्थना करने से पूर्व जो उस व्यक्ति में गुण है उनको याद करके परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए। किसी की कमजोरी को फिर अन्त में याद करके उसके निवारण के लिए भी लगे हाथों माँग लेना अधिक उत्तम है। इस प्रकार उस परम कृपामय की दया दृष्टि भी अति शीघ्र अवतरित हो जाती है।

माँ को अपने बच्चे की सब त्रुटियों का ज्ञान होता है। परन्तु उनको दूसरों से छुपा कर रखती है। यदि कोई व्यक्ति उन्हीं को खोलता रहे तो माँ को कदापि अच्छा नहीं लगेगा। परन्तु उसके गुण गाने से माँ को प्रसन्नता होती है और उसका हृदय गद्गद हो जाता है। इसी प्रकार परमेश्वर के सन्मुख उसके प्राणियों के गुण वर्णन करना उचित हैं। उनके लिए उसका सदा आभारी भी होना चाहिए। सम्भव है माँगने से पूर्व ही परम पिता सहर्ष सब अवगुण दूर कर दें और सब पाप दग्ध कर दें। ■

THE GURU LIGHTS UP OUR INNER BEINGS

"Slander and Talebearing (backbiting) are the two vices which play havoc with a man's life, condemnation of others only leads to accumulated impression of others vices within oneself...

Slandering, talebearing, exaggerated gossip and creating dissensions- all this gives rise to the filth of malice and ill will ... The devotee must be free from these". The upasak-the devotee- (ought) to acquire gentle, pure and serene disposition by winning over anger by love, enmity by amity; and subdue pride and ego with humility and complete surrender to Sri Ram, the Supreme Soul.

If the behaviour of a sadhak (devotee) is like the worldly people – full of deceit, trickery misdeeds and misconduct, then it is obvious that 'Ram Naam" jaap has had no effect on his inner being.

The Sadhak of 'Ram-Naam' truly believes and lives with the firm conviction that the prayer arising of the inmost recesses of a pure heart shall resound in the universe for the well being of one and all:

"Vridhi-Aastik Bhaav Kee, Shubh Mangal Sanchaar,

Abhyudaya Sad-Dharm Kaa, Ram Naam Vistaar."

(May with the Grace and Benevolence of the Supreme Soul, Sri Ram, the Universe be led into abiding faith and knowledge of the all-pervasive godliness, goodness and well-being! May true spirituality permeate the Universe and the holy Ram-Naam transcend all worldly barriers.)

(Excerpted from '*Upaasak ka Aantrik Jeevan*'-Inner life of the Devotee-by Sri Swami Satyanand ji Maharaj) ■

Messages

चन्द्रस्वामी उदासीन
साधना केन्द्र आश्रम
ग्राम : डुमेट (बाड़वाला)
डाकघर : अशोक आश्रम (डाकपत्थर)
देहरादून-248125, उत्तराखण्ड
भारत ✆ (01360) 222204

Chandra Swami Udasin
SADHANA KENDRA ASHRAM
Village : Domet (Barwala)
PO : Ashok Ashram (Dakpathar)
Dehradun-248125, Uttarakhand
India ✆ (01360) 222204

ब्रह्मलीन डॉ. विश्वामित्रजी महान् संत थे। वे बड़े ही तपस्वी, मधुर, विनम्र और भजननिष्ठ थे। हमारे आश्रम पर उनकी विशेष कृपा थी और वे कभी-कभी यहाँ आकर हम सबको दर्शन दे जाते थे। भगवान् से प्रार्थना है कि वे अपने सेवकों का सदा मार्ग दर्शन करते हुए उन पर कृपा बनाए रखें। उनकी पावन समृति को हम सबका भाव भरा प्रणाम्।

Chandra Swami Udasin

चन्द्र स्वामी उदासीन

08.03.2013

PLANNER

APRIL 2013

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

MAY 2013

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

JUNE 2013

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

Sadhna Satsang in Haridwar
Purnima Jaap
Tuesday Jaap
Open Satsang
Jaap and Sunder Kand Path on 2nd
Jaap on 13th & 29th

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

जनवरी से मार्च 2013

नाम दीक्षा

हम साधकों को परम श्रद्धेय स्वामी डा. विश्वामित्र जी महाराज की सूक्ष्म उपस्थिति महसूस होती रहती है, और निर्वाण के उपरान्त बड़े गुरुजनों की तरह वे भी अधिक सक्रिय लगते हैं। परम श्रद्धेय स्वामी डा. विश्वामित्र जी महाराज नाम दीक्षा देते समय कहा करते कि पूज्य श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ही आप को नाम दीक्षा देते हैं, और स्वयं को मात्र यन्त्र एवं गवाह मानते थे। इसी प्रथा के अन्तर्गत परम श्रद्धेय स्वामी डा. विश्वामित्र जी महाराज के महानिर्वाण के उपरान्त नाम दीक्षा का प्रथम आयोजन 1 जनवरी 2013 को श्रीरामशरणम् दिल्ली में हुआ।

दीक्षा से पहले कुछ साधकों ने दीक्षा कक्ष में जाप किया और गुरुजनों से अनुनय विनय की, ''प्रभु सब काम आपका ही है, सब काम करने कराने वाले आप स्वयं हैं, सब काम ठीक ठाक हो।'' वहां बैठ कर सुन्दर अनुभूति हुई, ऐसा महसूस हुआ कि श्री महाराज जी सदा की तरह श्री अधिष्ठान जी का परदा खोल कर प्रकाश कर रहे हैं और फिर दोनों हाथ जोड़ कर मुस्करा रहे हैं।

जब दीक्षा के लिए साधकों को अन्दर भेजा जा रहा था तो श्री महाराज जी वहाँ सबको मुस्करा कर देख रहे थे। वहाँ पर स्वयं साक्षात् विराजमान थे और सारा वातावरण उनकी तरंगों से भरपूर था।

इस अनुभव से यह विश्वास और भी पक्का हो गया कि गुरु शरीर नहीं गुरु तत्व है।

जनवरी–फरवरी में विभिन्न सत्संग केन्द्रों पर 17000 से अधिक लोगों ने भाव–चाव से नाम दीक्षा ग्रहण की ।

17 मार्च, रविवार के दिन दिल्ली में 97 लोगों ने दीक्षा ली।

झाबुआ - एक अनुकरणीय अनुभव

आस्था की तरंगों के बीच 'राम नाम' का सुमिरन करते श्रद्धालु भक्ति के रस से सराबोर हो रहे थे। हर किसी के मुख से एक ही स्वर प्रस्फुटित हो रहा था– 'राम–राम, राम–राम'। अवसर था श्रीरामशरणम् के चार दिवसीय सत्संग महोत्सव का। इस की शुरुआत शुक्रवार सुबह साढ़े ग्यारह बजे 'राम नाम' दीक्षा के साथ हुई। पहले ही दिन 20 हज़ार से अधिक गुरु भक्त 'राम–नाम' की शरण में पहुँचे। इस में 8176 महिला व 7293 पुरुषों ने दीक्षा ली। महोत्सव में स्थानीय स्तर से लेकर आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के साथ ही कुल नौ राज्यों से बड़ी संख्या में दीक्षार्थी और साधक पहुँचे। श्रद्धालुओं के उमड़े सैलाब ने इस आध्यात्मिक महोत्सव को अर्धकुम्भ का रुप दे दिया। आलम यह था कि कॉलेज मार्ग पर केवल सिर ही सिर नज़र आ रहे थे सुबह साढ़े ग्यारह से शाम पाँच बजे तक चले दीक्षा समारोह में सद्‌गुरु महाराज जी की सीडी के माध्यम से करीब 15 हज़ार साधकों ने दीक्षा ग्रहण की।

दैनिक भास्कर झाबुआ के सौजन्य से ■

साधना सत्संग एवं खुले सत्संगों का विवरण

हांसी में 4 से 7 जनवरी तक साधना सत्संग हुआ जिसमें 543 साधक सम्मिलित हुए। खुली बैठक में संख्या हज़ारों में थी।

मुम्बई में 12 व 13 जनवरी को खुला सत्संग हुआ और 91 लोगों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

ग्वालियर में 25 से 28 जनवरी को साधना सत्संग हुआ जिसमें 538 साधक सम्मिलित हुए। 411 साधक दीक्षित हुए। खुली बैठकों में 2500 के लगभग लोग थे।

इन्दौर में 1 से 3 फरवरी को खुला सत्संग हुआ जिसमें 300 से अधिक साधक सम्मिलित हुए। खुली सभा में 1700 लोग थे। 335 लोगों ने नाम दीक्षा ली।

झाबुआ में 9 से 11 फरवरी को खुला सत्संग हुआ जिसमें 15453 लोगों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

बिलासपुर में 22 से 24 फरवरी को खुला सत्संग हुआ जिसमें 167 साधकों ने भाग लिया। खुली बैठक में 600 लोग थे। 90 लोगों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

सिरसा में 2 व 3 मार्च को खुला सत्संग हुआ जिसमें 101 साधक सत्संग में सम्मिलित हुए। खुली बैठक में लगभग 450 लोगों की उपस्थिति रही।

रोहतक में 14 जनवरी से 17 फरवरी तक 35 दिन का अखण्ड जाप हुआ जिसमें साधक बड़े भाव चाव से सम्मिलित हुए एवं 18 करोड़ से अधिक 'राम नाम' जाप हुआ।

हरिद्वार/देहरादून में 12-13 मार्च को 137 लोगों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

2013 मे होने वाले कुछ कार्यक्रम

जोधा निवास, शिमला (हिमाचल प्रदेश), में 26 मई, दोपहर 3 से 4 बजे श्री अमृतवाणीजी पाठ, भजन कीर्तन एवं प्रवचन होगा। तत्पश्चात् नाम दीक्षा होगी।

हरदा, (म. प्र.) श्रीरामशरणम् में 15 सितम्बर 2013, रविवार प्रातः 7 बजे से दोपहर 1 बजे तक अखण्ड जाप होगा। दोपहर 3 से 4-30 बजे विशेष सत्संग होगा जिसमें श्री अमृतवाणीजी पाठ, भजन कीर्तन व प्रवचन होगा। तत्पश्चात् नाम दीक्षा होगी।

होशंगाबाद, (म. प्र.) में 15 दिसम्बर 2013 प्रातः 7 बजे से दोपहर 1 बजे तक अखण्ड जाप होगा। दोपहर 3 से 4-30 बजे विशेष सत्संग होगा जिसमें श्री अमृतवाणीजी पाठ, भजन कीर्तन व प्रवचन होगा। तत्पश्चात् नाम दीक्षा होगी।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् भवनों की प्रगति

पीली बंगा, राजस्थान में श्रीरामशरणम् के निर्माण के लिए भूमि ले ली गई है, 31 मार्च तक रजिस्ट्री होने की उम्मीद है।

नरोट, गुरदासपुर में श्रीरामशरणम् के निर्माण के लिए भूमि ले ली गई है।

रतनगढ़, राजस्थान में साधकों के ठहरने के लिए दो मंजिला भवन का निर्माण कार्य आरम्भ हो गया है।

नामरुप, आसाम में ली गई दो एकड़ भूमि में पहले से बने एक हॉल में साप्ताहिक सत्संग आरम्भ हो गया है।

फरीदाबाद, हरियाणा में श्रीरामरशणम् का उद्घाटन 25 मई को है।

इन्दौरा, (हि.प्र.) में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य प्रगति पर है। मई–जून में उद्घाटन की सम्भावना है।

श्री अधिष्ठान जी

परमात्मा का प्रतीक, अर्थात परमात्मा। हमारा आधार, हमारा सहारा। "यह बहुत मांगलिक है। यह भले ही स्याही के साथ कागज़ पर लिखा हुआ है किन्तु इसमें भावना बहुत है और यह चैतन्य है। श्री अधिष्ठान जी को बहुत आदर के साथ रखिएगा जैसे भरत के लिए राम जी की खड़ावें। जब आपके सामने श्री अधिष्ठान जी होंगे तो विघ्न डालने वाले संकल्प आपके मन को विचलित नहीं करेंगे।"

– स्वामी श्री सत्यानन्दजी महाराज

नवम्बर 2012 से मार्च 2013 तक 180 साधक परिवारों को श्री अधिष्ठान जी प्राप्त हुए। ■

अनुभूतियां

गुरुजनों का उपकार

मैं परिवार के छः सदस्यों सहित अपने भाई की अस्थियाँ लेकर, मुम्बई से दिल्ली हवाई जहाज से जा रही थी, उड़ान शाम को 5 बजे की थी। अभी हम दिल्ली से पचास कि.मी. ही दूर थे, तभी पायलेट ने सूचित किया कि दिल्ली में तूफान तथा आंधी के कारण विमान दिल्ली में उतर नहीं पाएगा, और इसलिए आसमान में ही वे तीस मिनट तक आंधी के थमने का इंतज़ार करेंगे। पायलेट ने यह भी बताया कि उनके पास सिर्फ चालीस मिनट के उड़ान के लायक ही पैट्रोल है। अभी कुछ पैंतीस मिनट हुए होंगे कि हमारा हवाई जहाज ज़ोर से हिलने लगा और अचानक पचास फीट नीचे की ओर गिरा और, तूफान में जा फँसा। चारों ओर बिजली कड़क रही थी और ओले गिर रहे थे। डर से लोगों की चीखें निकलने लगीं, कुछ यात्री अपनी सीटों से गिर गए। सभी को ऐसा लगने लगा जैसे कि अन्त निकट हो।

मैंने आँखें बन्द कर ली और ज़ोर–ज़ोर से 'राम नाम' मन्त्र जपना शुरु कर दिया। गुरुदेव की तस्वीर मेरे सामने आई और मुझे लगा कि वह मेरे पीछे खड़े हैं। गुरुजन स्वामी जी महाराज और श्री प्रेम जी महाराज का स्पर्श भी मैंने महसूस किया। मुझे लगने लगा जैसे श्री प्रेम जी महाराज व स्वामी जी महाराज ने उस हवाई जहाज़ को अपने हाथों में उठा लिया है और तूफ़ान से बाहर ले जा रहे हैं। अचानक हवाई जहाज़ हिलना बंद हो गया और, सूचना आई कि हवाई जहाज़ दिल्ली उतरने की जगह अब अहमदाबाद में उतरेगा। यह सब क्या हुआ और कैसे हुआ मुझे नहीं पता, मुझे तो बस इतना पता है कि हम पर परमेश्वर की अपार कृपा है, याद करते ही मेरे गुरुजन मेरे सामने थे और हमें मौत के मुँह से बाहर निकाल लाए। पहले भी हर मुसीबत का सामना करने की हिम्मत उन्हीं से ही मिली, पर इस बार तो स्मरण करते ही मैंने उन्हें अपने पास पाया। ■

प्रभु घर आए

एक मंगलवार के दिन मैं जब हॉल में बैठकर जाप कर रही थी, तभी एक अजीब सी घटना का अनुभव हुआ। मैंने अपने दोनों हाथों से जाप की माला पकड़ी हुई थी। सीधा हाथ जिससे मैं मनका फेर रही थी, नीचे था और बायाँ हाथ थोड़ी ऊँचाई पर। जाप करते करते मैंने अनुभव किया, कि मैं श्री भगवान के साथ सीढ़ियाँ चढ़ती जा रही हूँ, सीढ़ियाँ थोड़ी ऊँची थी इसलिए मैं बार बार भगवान राम से कहते जा रही थी, "अब बस थोड़ी सी ही सीढ़ियाँ बाकी हैं।" 108 मनके पूरे होने पर मैंने फिर भगवान जी से कहा कि, "अब तो नीचे उतरना है।" इस पर प्रभु ने उत्तर दिया, "नीचे तो आप आराम से उतर जाएँगी।" सीढ़ियाँ उतरने के बाद मैंने देखा कि मैं अपने घर के गेट पर खड़ी थी और भगवान मेरे साथ थे। मेरे बेटे ने घर का दरवाज़ा खोला, जैसे कि उसे पता हो कि भगवान हमारे घर पधारने वाले हैं। हमने उन्हें पूरा घर दिखाया, पूरा घर दिखाने के बाद जब हम भगवान जी को श्री अधिष्ठान जी के सामने ले गए, तो वे वहाँ गुम हो गए और मेरा ध्यान टूट गया। ■

अलौकिक ! अदुभुत ! दिव्य ! अकल्पनीय ! ग्वालियर साधना - सत्संग

अलौकिक ! अदुभुत ! दिव्य ! अकल्पनीय ! ऐसे न जाने कितने शब्द थे साधना सत्संग में शामिल साधकों की जुबान पर ! तीन रात्रि ग्वालियर साधना–सत्संग में पधारे अधिकांश साधक एक–दूसरे को अपनी अनुभूतियां इसी प्रकार संकेत से समझा रहे थे। सत्संग में आने से पहले मन में एक आशंका थी कि पूज्य श्री महाराज जी के बिना कैसा रहेगा साधना–सत्संग? तीन दिन में यह आशंका न जाने कहाँ तिरोहित हो गई? लगा ही नहीं पूज्य श्री महाराज जी हमारे बीच नहीं हैं। हर क्षण उनकी अनुभूति होती रही। अपने प्रवचनों से सबकी आन्तरिक जिज्ञासाओं का वे उसी प्रकार समाधान करते रहे जैसे पूर्व में किया करते थे। वे समझा रहे थे कि गुरु को शरीर समझने वाले को कुछ नहीं मिलता। गुरु तो तत्व है जो कभी मरता नहीं। गुरु के प्रति गुरु–भाव होना जरुरी है। भाव से सच्ची साधना संभव है। धन से कुछ ही मन्दिर बनाए जा सकते हैं, परन्तु भाव से तो अनेक मन्दिर बनाए जा सकते हैं।

ग्वालियर की धरती धन्य हुई साधना–सत्संग के अनवरत क्रम को पाकर। मुख में राम–नाम का महामन्त्र और हृदय में गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता का भाव लिए सभी साधक अपने घर लौटे जहाँ इस तीन रात्री प्रशिक्षण को व्यवहार में उतारा जा सके। ■

Excerpts from Pujniya Maharajji's conversation with children and adults, May 1999, during visit to the United States of America.

Q: Maharajji do you live with your family?

Pujniya Maharajji: 'If you mean by family - wife, children and parents, then my parents are dead, I don't have a wife and so I don't have children. Yet, I belong to a very large family *beta* and in that family I cannot exclude anybody. Your father may be having family members of four or five, I have a family of millions now. But traditionally, if the family means wife, children, parents I have none. Is that all-right.'

Q: Maharajji how long have you been following Hinduism?

Pujniya Maharajji: 'How long have I been studying Hinduism ! Well *Beta*, as far as I remember right from my childhood. For me religion means following certain principles. Again I would say for me religion means any set of thoughts, any set of actions which makes one a human being. Human beings – his first duty is performing all the duties given by the Almighty. His duty is to perform the duty towards God also. In my opinion, he is a good human being or he is a perfect human being who performs all his duties including his duty towards the Almighty. He who does not perform his duty towards God while performing all the duties given by God - but does not perform the duty towards God is an imperfect human being. By practicing religion you perform the duties towards the world, towards your family, towards your country, towards *samaj*, towards everybody and also perform your duty towards the Almighty. That is to make the remembrance constant. Be thankful to Him for everything He has blessed us with .'

Q: Maharajji, when did Hinduism begin?

Pujniya Maharajji: '*Beta*, the exact date is not known. When did it start but people say it is Sanatan and Sanatan means everlasting. *Jo aadi se shuru hua hai. Kab se shuru hua hai ?– aadi se shuru hua hai , ab bhi chal raha hai aur aage bhi chalta rahega us ko sanatan kaha jata hai, shashwat kaha jaata hai, eternal kaha jata hai*. That is your Hinduism. No date is known for it.'

Q: Maharajji, I am a student. What is my duty?

Pujniya Maharajji: '*Beta, ek baat kahun* - When I was studying for Masters the subject given to me by the Lord was the only subject in which I never got first class marks- subject of microbiology. But see His Grace - In two years time my masters made me so bright *Ki mujhe chalti phirti dictionary kehne lag gaye the – yeh microbiology ki chalti phirti dictionary hai. Would you believe Beta mere Guru Maharaj ney mera Shree Ram Sharnam aana band kardiya hua tha- you have to study ! Vidyarthi ho aap – is waqt aap ki pehli duty jo hai weh adhik se adhik padne ki duty hai. Mujhe Maharaj kaha karte- "do baje key karib jis waqt pad kar jab thak jaya karo – 2 a.m. – padh kar jab thak jaya karo – mera kamra hostel main 7th floor par tha, Us key upar chhat thi siraph – upar ja ke thodi der key liye deep breathing kiya karo aur us key baad padh liya karo" – never said 'aa kar so liya karo, ya aaram kar liya karo ya jaap kar liya karo '- nahin – practical baat beta yahi hai ek vidyarthi – jis waqt vidyarthi hai - use vidya pratham kartavya uska hona chahiye. Is waqt hame vidya uparjan karni hai. Dekho kitni sundar hai, Maharaj kehte 'Thak jao upar chale jaya karo thodi der ke liye deep breathing kar aa ke phir padhna arambh karna' – mano* emphasizing on the fact that you are a student and you must do what a student is supposed to do to get the maximum.' ■

Hope you enjoyed this issue of Satya Sahitya. After reading it, if you do not wish to preserve this copy, please take care to return it to your local centre or the nearest Shree Ramsharnam.

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

Shree Ram Sharnam, 8A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024.
©Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, New Delhi.
Email: shreeramsharnam@gmail.com; shreeramsharnam@hotmail.com
Website: www.shreeramsharnam.org

RNI No. "Applied for". Price ₹ 5